हादि-विद्या की ऋषिका भगवती लोपामुद्रा

महर्षि अगस्त्य की पत्नी लोपामुद्रा श्रीविद्या के हादि-सम्प्रदाय की प्रवर्तिका हैं। त्रिपुरारहस्य, माहात्म्यखण्ड, अध्याय ५३ में लोपामुद्रा को श्रीविद्या का अवतार बतलाया गया है। ये पतिव्रताओं में श्रेष्ठतमा हैं। स्वयं भगवती त्रिपुरा (श्रीविद्या) ने ही महर्षि अगस्त्य से कहा था कि 'तुम्हारी पत्नी इस राजकन्या (विदर्भनरेश राजसिंह की पुत्री) लोपामुद्रा ने अपने पिता के घर पर ही परा श्रीविद्या की भक्ति प्राप्त कर ली थी।' फिर भगवती ने दर्शन देकर जब लोपामुद्रा से वर माँगने को कहा तब उसने त्रिपुरा की भक्ति ही माँगी। फलतः आगे चलकर वे श्रीविद्या की 'ऋषिका' बन गयीं और उनसे नाम से परा विद्या 'हादि' सम्प्रदाय के रूप में चल पड़ी। यों इन्द्र, चन्द्र, मनु, कुबेरादि द्वारा श्रीविद्या का प्रचार-प्रसार किया गया और वे भी इस विद्या के ऋषि माने जाते हैं, फिर भी वर्तमान में बहुप्रचलित कामराजोपासक श्रीविद्या के कादि-सम्प्रदाय के बाद महासती लोपामुद्रा का हादि-सम्प्रदाय ही श्रीविद्या के उपासना-क्षेत्र में आज तक प्रचलित है। यथा-

यत्ते प्रिया सती लोपामुद्राख्या राजकन्यका।
पुरा सा पितृगेहस्था प्राप भक्तिं परापदे।
तद्धेतुं ते प्रवक्ष्यामि न तज्ञानाति कश्चन।।
त्रिपुरामुख्यशक्तिस्तु भगमालिनिकाभिधा।
तत्सेवनपरो राजा सर्वदा सर्वभावतः।।
बाल्यादियं शुद्धचित्ता पितृसेवापरायणा।
पितुर्दृष्ट्वोपासनायाः क्रमं देव्या यथाक्रमम्।।
राज्यकर्मकरे तस्मिंस्तां समाराधयत्यसौ।
एवं चिराराधनेन भक्त्या भावनयापि च।।
तुतोष सा भगवती वरेण समछन्दयत्।
बद्रे चासौ सर्वजगत्पूज्यायाः पादसेवनम्।।

प्रसन्ना सापि सद्विद्यां त्रैपुरीं समलक्षयत्।
लक्षिता चापि तां विद्यां वासमुद्रपरिप्लुताम्।।
समुद्धरद् रत्नमिव ततस्तस्य प्रसादनात्।
विद्याऋषित्वं सम्प्राप्ता तन्नाम्ना सा स्फुटं गता।।

इस प्रकार महामाया आदिशक्ति के उपासकों में भगवान् दत्तात्रेय के बाद प्रथम पतिव्रता साध्वी लोपामुद्रा का नाम बड़ी श्रद्धा-भक्ति के साथ लिया जाता है।

वसिष्ठपत्नी अरुन्धती की तरह ही भगवती लोपामुद्रा भी महर्षि अगस्त्य की पतिव्रता पत्नी थीं। देवी की प्रेरणा से विदर्भराज की राजपुत्री के रूप में जन्म लेकर भी अगस्त्य को पुत्र प्रदान कर उनके पितरों को मुक्त करने के लिये ऋषिद्वारा पत्नीरूप में माँग करने पर देवी ने पिता को सहर्ष स्वयं को उन्हें समर्पित कर देने की अनुमति दे दी। राजकुल में पालित-पोषित लोपामुद्रा ने अगस्त्य-पत्नी बनते ही हँसते-हँसते तपस्विनी का बाना पहन लिया और उनके साथ तप और गार्हस्थ्य में समरस हो गयीं। अन्ततः ऋषि को भी कहना पड़ा कि 'तुष्टोऽहमस्मि कल्याणि तव वृत्तेन शोभने।' अगस्त्य के आश्रम पर वनवास के संदर्भ में मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जगन्माता जानकी के साथ पधारे तो ऋषिदम्पति ने उनका स्वागत-सत्कार किया। अगस्त्य-आश्रम में पधारे बृहस्पति ने भी लोपामुद्रा के पातिव्रत की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

प्रायः सिंहराशि का २२वाँ अंश बीतने पर जब अगस्त्य (तारा) का उदय होता है, तब उस समय राज्य, सम्पदा आदि के स्थायित्व के लिये अगस्त्य-लोपामुद्रा के पूजन एवं अर्घ्यदान का विधान है। अर्घ्यदान के मन्त्र हैं-

काशपुष्पप्रतीकाश अग्निमारुतसम्भव।
मित्रावरुणयोः पुत्र कुम्भयोने नमोऽस्तु ते।।
राजपुत्रि नमस्तुभ्यं ऋषिपत्नि नमोऽस्तु ते।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं महादेवि शुभानने।।

ऋग्वेद ने प्रथम मण्डल के १७९ वें सूक्त में अगस्त्य का स्मरण किया है। उस सूक्त के ऋषि लोपामुद्रा और देवता अगस्त्य हैं।